समकालीन हिन्दी कहानी : बदलते जीवन सन्दर्भ के परिप्रेक्ष्य में

शिखा उमराव,

शोध छात्रा
ज्वाला देवी विद्या मन्दिर,
पी0जी0 कालेज,
कानपुर, उ0प्र0

सारांश

कहानी हिन्दी साहित्य की एक महत्वपूर्ण विधा है। कहानी का इतिहास नवीन न होकर बहुत प्राचीन विद्या है। हितोपदेष की कथाओं और बैताल पच्चीसी जैसी कथाओं के माध्यम से भारतीय समाज में नीति– नैतिकता और आदर्श की शिक्षाएँ दी जाती रही है। मानव इतिहास इस बात का साक्षी है जब से मनुष्य में अपनी भावनाओं तथा संवेगों को अभिव्यक्त करने की क्षमता पायी है तभी से वह कहानी कहता व सुनता आ रहा है। इससे यह प्रतीत होता है कि कहानी सुनना और कहना मनुष्य की सहजता को व्यक्त करता है। कहानी विधा ने अपने प्रारंभिक काल से अब तक बहुत ही उतार–चढ़ाव देखे है। जब भारत को आजादी प्राप्त हुई तब कहानी साहित्य में कई बदलाव देखने को मिले जैसे– नयी कहानी, सचेतन कहानी, अकहानी सठोत्तरी कहानी आदि विभिन्न सांराशों से विभूषित होकर कहानी ने अपना नया रूप धारण किया तथा कथ्य और शिल्प की दृष्टि से प्रभावशाली बनी है।

आज की कहानी नये शिल्प विधान के साथ समकालीन तथ्यों व सत्यों को वास्तविकता की धरती पर उजागर कर रही है। आज हम जिस वातावरण में अपना जीवन व्यतीत कर रहे है वहाँ हमारे परम्परागत बँधे हुये जीवन मूल्य और परम्परायें आधुनिक सन्दर्भों में हमें एक नये वक्त की टकराव की परिस्थितियों में लाकर खड़ा कर दिया है। आज व्यक्ति अपने पूर्वजों की बात (आचरण) को बहुत पीछे छोड़कर आगे बढ़ने में विश्वास रखता है। अतः कह सकते है कि आज का व्यक्ति उन सभी परम्पराओं को अपनी आने वाली पीढ़ी को नहीं देना चाहता। उनके द्वारा सिखाये गये जीवन मूल्य ''प्रातः काल उठ कर रघुनाथ मातु पितः गुरू नावहि माथा'' अर्थहीन व खोखले होते चले जा रहे है।

'बागवान' जैसी फिल्मों के माध्यम से जिसका सजीव व जीवन जीने जैसा चित्रण आज भी हमें घर–घर में दिखाई देता है। कहने का तात्पर्य यह है कि आज जिस तरह से मनुष्य मनुष्य का नहीं होना चाहता है उसे अपने पराये सम्बन्धों का कोई कद्र ही नहीं है। यदि हम सोशल मीडिया की बात करें तो कई ऐसे किस्से सुनने व देखने को मिल जाते है जिसमें सम्बन्धों का बिखराव पूर्णतयः हो चुका होता है।

साहित्य के इतिहास में समकालीनता एक अवधारणा है। इस काल से भी इस अवधारणा का संबंध है, लेकिन मूलतः यह मूल्यबोध ही है। भविष्य दृष्टि और जीवन–सन्दर्भ के परिवर्तित रूप इसके प्रमुख आयाम है। जीवन सन्दर्भों में निरन्तर आने वाले इन्हीं परिवर्तनों पर आधारित होती है।

समकालीन हिन्दी कहानियों में जीवन यथार्थ की अभिव्यक्ति हुई है। समकालीन जीवन के हर पक्ष को वास्तविकता के साथ अभिव्यक्त करती है। इसमें कोई शक नहीं है समाज बहुत तेजी से बदला है और बदलने का क्रम आज भी जारी है और आगे भी जारी रहेगा। देश में बदलती सामाजिक परिस्थितियों ने अनेक जीवन मूल्यों में परिवर्तन किया है। जो धनवान लोगों के लिये बहुत सहज है परन्तु मध्यवर्ग आज भी किसी के प्रति खुद को ऊपर नहीं समझता जिसकी पीड़ा, जिसके आँसू, उसके कष्ट आज के कहानीकारों की कथाओं में कल्पना जगत के माध्यम से इस विश्वास में विचरण कर रहे है। यही परिवर्तन मूल्य दृष्टि समकालीन कहानी में अभिव्यक्त हो रही है। समकालीन कहानीकार अपने–जीवन के अनुभव को कहानी में लाकर उन्हें काल व परिवेश के वृहतर प्रश्नों से जोड़ देता है। ''पहले के लेखक की एक अतिरिक्त सत्ता थी, इसलिये वह रचना करता था। आज का लेखक रचना को झेलता है, क्योंकि हर जगह भागीदारी की हैसियत से वह विद्यमान रहा है।'' समकालीन हिन्दी कहानी साहित्य में विभिन्न प्रकार के बदलाव को देखा जा सकता है। जैसे– पिता–पुत्र, पति–पत्नी, भाई–बहन आदि सम्बन्धों में बिखराव। नये जीवन और मूल्यगत संकट के परिप्रेक्ष्य में कहानीकारों ने बदलती हुई जीवन स्थितियों और संबंधों में व्याप्त तनाव, विघटन, जटिलता को पहचान कर अभिव्यक्ति करने का सफल प्रयास किया है। भीष्म साहनी, धर्मवीर भारती, निर्मल वर्मा, अमरकांत, शेखर जोशी, मोहन राकेश, कमलेश्वर, हरिशंकर परसाई, राजेन्द्र यादव, ऊषा प्रियवंदा। कृष्णा सोबती, अनामिका, रवीन्द्र कालिया, ममता कालिया, ज्ञानरंजन आदि प्रमुख समकालीन कहानीकार है।

समकालीन परिवेश में जो नयी पीढ़ी नजर आ रही है उनके जीवन मूल्यों में पुरानी पीढ़ी की अपेक्षा तेजी से परितर्वन आ रहा है। वस्तुतः जीवन मूल्यों का प्रयोजन ही समाज में नयी व्यवस्था का संचार करना है। आम आदमी परम्परागत सम्बन्धों में रहकर वह ऐसा नहीं कर सकता वह ऐसा कुछ नहीं प्राप्त कर सकता जो वह प्राप्त करना चाहता है या जो उसकी मनःस्थिति को शान्त कर सकने में सफल हो। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहने के कारण ही मनुष्य को सामाजिक नीति–नियमों का पालन करना आवश्यक हो जाता है। या हम कह सकते है कि मनुष्य समाज के बन्धनों से खुद को भिन्न नहीं रख सकता है।

मनुष्य की पहचान पहले उसके समाज फिर उसके परिवार से होती है। मनुष्य अपने परिवार का अहम हिस्सा होता है। परिवार समाज का एक अंग है। पारिवारिक जीवन मूल्य के अन्तर्गत परिवार को केन्द्र में रखा जाता है।

आज पारिवारिक सम्बन्धों में तेजी से बदलाव होता देखा जा सकता है। समकालीन समाज में एक व्यक्ति के लिये धन का महत्व, बढ़ता जा रहा है। जिसके फलस्वरूप हमारे समाज में बुजुर्गों के प्रति आदर धीरे–धीरे समाप्त होता जा रहा है। उदय प्रकाश कृत 'छप्पन तोते का करधन' एक ऐसी कहानी है जिसमें धन की लालसा में पारिवारिक संबंध बिखरते नजर आता है। आभूषण की चाह तो हमारे समाज की पुरानी समस्या बनी हुयी है। जो आज भी विद्यमान है। कहानी में करधन एक प्रकार का आभूषण है जो छप्पन तोले का है यह कहानी एक निर्धन परिवार की है जो बेहद कठिनाई से अपना जीवन यापन कर रहा है। इस कहानी में एक दादी है जिसके पास ऐसा ही एक करधन है। जब परिवार के अन्य लोगों को इस करधन की बात पता चलती है। तो उन्हें लगता है कि इसे बेचकर उनकी गरीबी दूर हो सकती है। फिर परिवार के समस्त लोग दादी से मजबूरन वह करधन लेना चाहते है। जब दादी उसे देने से इन्कार करती है। तो दादी को बहुत यातनायें सहनी पड़ती है।

समकालीन समाज में धन ने अपना महत्व स्थान बना लिया है। वर्तमान में प्रत्येक व्यक्ति धन का लोभी बनता चला आ रहा है इसका कारण भी बहुत महत्वपूर्ण है आज का व्यक्ति किसी से भी पीछे नहीं रहना चाहता है वह समाज में दूसरे व्यक्ति से एक कदम आगे ही चलना चाहता है। जीवन की सार्थकता मुख्यतः धन पर ही आश्रित हो गयी है। समकालीन कहानियों में बदलते जीवन मूल्यों से यह पता चलता है कि आज का समाज अपनी पहचान बनाने में अपने पूर्वजों बुजुर्गों का अपमान ही नहीं उन्हें बेसहारा भी बना देते है। समकालीन कहानीकारों ने अपने समय को पूरी सत्यता के साथ चित्रित करते हुए मानव मन में चलने वाले अर्न्तद्वंद एवं परिवर्तित जीवन मूल्यों के साथ–साथ सामाजिक जीवन की विकट समस्याओं को विषय वस्तु बनाया समकालीन कहानीकारों ने जो समाज में घटनायें घट रही है जो आज के मनुष्य ने जिस रूप में भी जिंदगी को जिया है उस सबका प्रमाणित दस्तावेज समकालीन कहानी प्रस्तुत करती है। आज की युवा पीढ़ी पुराने मूल्यों से ऊब गयी है वह उन मूल्यों को अपने समाज में नहीं उपयोग करना चाहते है बल्कि वह पुराने मूल्यों को त्याग कर नवीन मूल्यों का सर्जन कर रहा है। इसका असर परिवार में दिखाई देता है जो समाज से कटता जा रहा है। आज की युवा पीढ़ी खुद को सबसे अलग रखना चाहता है वह संयुक्त परिवार में नहीं रहना चाहता है वस्तुतः परिवार संयुक्त न होकर एकल होते चले जा रहे है तथा उसमें दादा–दादी, माता–पिता, भाई–बहन जैसे पवित्र रिश्तों के प्रति अपनत्व और आत्मीयता कम होती चली जा रही है। मानवीय मूल्यों का त्याग कर वह स्वार्थ की भावना की ओर अग्रसर हो रहा है।

आज के दौर में सामाजिक पारिवारिक संबंध सम्पत्ति और स्वार्थ के घेरे में सिकुड़ कर रह गये है। भारतीय समाज में विवाह एक पवित्र बन्धन की संज्ञा मानी जाती है इस रिश्तों को सात जन्मों तक रिश्ता माना जाता था परन्तु आज वह एक समझौता बन कर रह गया है। सूर्यबाला निर्वासित की कहानी 'मानसी और मुंडेर' समाज के भावात्मक काया लोक की सच्चाई अंकित करती है। संजीव की कहानी, 'लोड़ शैड़िग' वर्तमान संबंधों की सच्चाई को बयां करती है दरअसल हम संबंधों को जी नहीं रहे है बल्कि उनका सिर्फ बोझ ढो रहे है। क्योंकि आज कोई भी रिश्ता अपनी आखिरी चरम सीमा तक नहीं पहुँच पाता है। इसका कारण उसमें अपनत्व में कमी है। हम बाहर से किसी भी रिश्तें अपनापन दिखा दे परन्तु अन्दर से वह खोखला ही होता है। समकालीन कहानीकारों ने दाम्पत्य संबन्ध में भी अपनी लेखनी चलायी है। कैसे दाम्पत्य जीवन में उतार–चढ़ाव आते है कैसे वह एक दूसरे के साथ जीवन निर्वाहर कर रहे है। इन सब को इन कहानीकारों ने बहुत ही अच्छी तरह से अपनी लेखनी में कैद किया है। पति पत्नी के होते हुये किसी दूसरी औरत पर आसक्त हो जाता है और पत्नी किसी दूसरे पुरूष पर। रवीन्द्र कालिया की, ''नौ साल छोटी पत्नी'' में पति यह सब जानता है कि उसकी पत्नी किसी और से प्रेम करती थी परन्तु उसके लिये अपनी दाल रोटी का पर्याय बन गयी है। जिसमें कोई सुकून नहीं है। सूर्यबाला की कहानी 'निर्वासित' में नारी के सभी मूल्य संस्कारों को चित्रित किया है। आज बेटे बहू के लिये पिताजी, ये बूढे लोग कहकर पुकारते हो लेकिन परिवार में आदर देते है।

समकालीन कहानियों में नारी के प्रति बढ़ती हिंसा, शोषण, बलात्कार, हत्या, अपमान आदि का यथार्थ चित्रण की अभिव्यक्ति हुई है। आज की नारी ने खुद को अँधेरी काल कोठरी से निकाल कर शिक्षा के क्षेत्र पर ला खड़ा कर दिया है। आज नारी पुरूषों के साथ शिक्षा ग्रहण कर रही है वह कन्धे–से कन्धे मिला कर प्रत्येक क्षेत्र पर सुशोभित हो रही है। परन्तु वर्तमान में नारी अभी भी खुद को स्वतन्त्र नहीं मान रही है वह समाज में व्याप्त बुराइयों का आज भी सामना कर रही है।

सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश में आये प्रत्येक स्तर के परिवर्तन को समकालीन कहानीकारों ने अपने वैविध्य स्वरूप में यथार्थ को अभिव्यक्त किया है। संस्कृति की जननी भारतीय नारी अब अपने परंपरागत संस्कारों, मूल्यों और आदर्शों को त्याग कर अपनी अस्मिता एवं अस्तित्व की तलाश में व्यस्त है। ज्ञानरंजन की 'सबंध और शेष रहते हुये' 'अमरूद का पेड़' उषा प्रियवंदा की 'मछलियाँ' मन्नू भंडारी की 'क्षय' आदि की कहानियों में नारी स्वतंत्रता और सांस्कृति मूल्यों के संकट को चित्रित करने का सफल किया गया है।

अतः हम कह सकते है कि समकालीन समाज में परिवार के पवित्र संबंधों की उस्मा और अपनापन पहले की तुलना में कम न होकर बहुत कम हो गया है यह उत्तोत्तर कम होती चली जा रही है। भारत में खण्डित पारिवारिक सम्बन्धों की वृद्धि का मुख्य कारण पुरानी पीढ़ी व नयी पीढ़ी की सोचने व समझने के अन्तर का होना है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. डाँ पुष्पलाल सिंह : समकालीन हिन्दी कहानी, पृष्ठ सं0–38
2. उदय प्रकाश : छप्पन तोले का करधन : पहल पत्रिका अंक – 27, पृष्ठ संख्या 243
3. सूर्यबाला : निर्वासित कहानी
4. संजीव : लोड शैड़िग : आप यहाँ है कहानी संग्रह, पृष्ठ सं0–44
5. रवीन्द्र कालिया, नौ साल छोटी पत्नी, 2002, किताब घर प्रकाशन, दिल्ली पृष्ठ सं0–43
6. डॉ0 हरदयाल, हिन्दी कहानी परम्परा और प्रगति, 2017, वाणी प्रकाशन पृष्ठ सं0–194
7. मधुरेश, हिन्दी कहानी का विकास, 2018, पृष्ठ सं0–176
8. संपादक, बटरोही, हिन्दी कहानी के अठारह कदम, वाणी प्रकाशन, 2002, पृष्ठ सं0–147
9. धनंजय, समकालीन कहानी दिशा और दृष्टि, 1970, अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ सं0–90
10. आधुनिक हिन्दी साहित्य : विविध आयाम, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2000, पृष्ठ सं0–109

Copyright © 2017 *Shikha Umrao*. This is an open access refereed article distributed under the Creative Common Attribution License which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.